International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 5 Issue 4, July-August, 2017, Impact Factor: 1.554

गिरिराज किशोर की कहानियों में जीवन मूल्य

अजीत पाल
म.न. एम–12, इन्द्रप्रस्थ कॉलोनी,
सोनीपत रोड़, रोहतक

सार

समय के साथ सब कुछ बदल जाता है यहाँ तक मानव भी उसका रंग–रूप, शारीरिक, मानसिक विभिन्न बदलाव आते हैं। जीवन चक्र चलता रहता है। इस आपाधापी में अपनी इच्छाओं के दर किनार करके हम आगे बढ़ जाते है और कुछ समय के लिए तो ये भी भूल जाते है कि हम क्या है, कैसे ह, हम क्या करना चाहते है ये सभी बातें गौण हो जाती है और जीवन को चलाना अर्थात् जो समाज के नियम बनाये हैं कि व्यक्ति जितना छोटा होता है उसे उतनी ही स्वतंत्रता होती है और जैसे जैसे वह बड़ा होता जाता है उसकी इच्छाएँ दबती जाती है। उसकी स्वतंत्रता कम हो जाती ह। सामाजिक, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ बढ़ती जाती है जैसे पढ़ाई के बाद विवाह, नौकरी, सामाजिक पारिवारिक सभी संबंधों का निर्वहन करना, जीवन यापन के लिए काम करना। इन सबके बीच इस आपाधापी में मानव मात्र मशीन के पुर्जो में बदल जाता है और उसे इतना समय नहीं मिलता कि वह किसी और की ओर ध्यान दे सकें। किन्तु उसमें जो सुखद क्षण की स्मृतियाँ है वो सदैव बनी रहती है और वही कभी–कभी उसे सुकुन की अनुभूति भी कराती है अथवा वो मन मस्तिष्क पर कहीं न कहीं प्रभावी रहती है। जब काफी समय बीत जाता है तब सब कुछ बदल जाता है यहाँ तक कि अपनापन प्रकट करने वाले फिर भी मनोकांक्षाएं वैसी ही रहती है। और उसे जब भी समय मिलता है तो अभिलाषा यही रहती कि उन्हें पूरा किया जाये। लालसा उन्हीं सुखद क्षणों की ओर होता है जब कभी कोई तकलीफ होती है तो मन उन्हीं क्षणों को याद करता है। भले ही स्थान बदल जाये। और ऐसी ही स्थिति समाज में नारी की भी रहती है वो सदैव अपनी इच्छाओं व आकांक्षाओं को मारती रहती है और जब भी अवसर मिलता है स्प्रिंग की तरह उछाल लेती अपनी भावनाओं को समेटने का प्रयत्न करती दिखायी देती है। और कुछ ऐसा ही निदर्शन गिरिराज किशोर की कहानियों में भी देखने को मिलता है।

Keywords: *नारी, अस्मिता, पवित्रता, संसार, शोषण, अधिकार, संयोग, व्यवस्था, जिम्मेदारी, मूल्य।*

भूमिका

गिरिराज भारतीय समाज वर्तमान में संक्रमणकालीन स्थितियाँ से गुजर रहा है। जिस कारण जहाँ एक ओर सामाजिक पारम्परिक मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं वही अंधानुकरण को प्रवृत्ति भी

जनमानस में पनप रही है। आधुनिकता और सरलीकरण के नाम पर लोगों में आने वाले बदलाव एक नई सामाजिक संरचना को प्रभावी कर रहा है। जिसका प्रभाव समाज के विभिन्न पक्षों पर पड़ने लगा है। गिरिराज किशोर की कहानियों में जहाँ पुरातन परम्पराओं के प्रभाव का आकलन हुआ। वहीं बदलते परिवेश में नवचिंतन की प्रभावशीलता को भी शब्द दिया गया है। उन्होंने कहानियों में सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों को भी नवीन दृष्टिकोण से अंकित किया है। समकालीन परिवेश में जीवन मूल्यों के बदलते आयामों ने सबसे अधिक नैतिक मूल्यों का पतन किया है जिसकी छाया समाज, व्यवहार से आगे बढ़कर राष्ट्रीय संदर्भों तक में पड़ने लगी है। विज्ञानी, अन्वेषण, प्रत्यावर्तन, सौदागर हिप्–हिप् हुर्रे एवं यंत्र मानव कहानियों में राष्ट्रीय एवं नैतिक स्थितियों की सच्चाई ब्यान करने का कार्य गिरिराज किशोर न किया है। पैसे, प्रतिष्ठा की भूख ने समकालीन समाज की चेतना को भोथरा कर दिया है। सम्पूर्ण कवायत मानसिक सुखानुभूति के लिए है। दीन, ईमान, कर्त्तव्य, आचरण, चरित्र स्वार्थ का ताप लगते ही मोम की तरह पिघल जाते है।

समाज के यथार्थ की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है नयी कहानी। समाज ने फैली सामाजिक अव्यवस्था, पूँजीवादी अव्यवस्था का आधिपत्य सामाजिक नियमों की अवामनना, समानता के अधिकार के नाम पर एक मजाक, निम्न आर्थिक स्तर एक अभिशाप बन जाता है। ऐसी समस्याओं की सफल अभिव्यक्ति के लिए यह एक सशक्त विधा है। इसे विभिन्न सन्दर्भों में समझा जा सकता हैः–

1. पारम्परिक और प्रगतिशील मूल्य – वर्तमान में जिन्दगी का खोखलापन खालीपन, अजनबीपन, संत्रास, घुटन, रिश्तों का टूटना, बोरियत का अहसास आदि का चित्रण गिरिराज किशोर की कहानियों में व्यापक स्तर पर हुआ है। 2 जुलाई 1967 के धर्मयुग में छपे 'दिमागों में दस्तक देते प्रमाणिक लेखन के कथा–पात्र' में कमलेश्वर जी ने 'पेपरवेट' तथा अन्य कहानियों के बारे में लिखा है–

''पेपरवेट' में सन्दर्भ चाहे दूसरा, स्थितियाँ दूसरी हो, पर अपने निर्णयों को न ले सकने वाले लोगों की विवशता और उनका रूका हुआ होने की विपदाग्रस्त मानसिक संकुलताएँ इस समय की व्यापक मनः स्थितियों और पराजय की प्रतिलिपियाँ है।''

गिरिराज किशोर की 'पहचान' कहानी आधुनिकता का बोध लिए है। साइकिल और कारों से बात शुरू होती है और इससे जो संदर्भ निकलते हैं उससे आधुनिकता का बोध होने लगता है।

'तार द्वारा वापसी' महानगरीय आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार एवं चकाचौंध के मायावी आकर्षण में फंसकर पतंगे की तरह छटपटाती नीता की कहानी है। जो इलाहाबाद का रेंगता शहर मानकर मुम्बई की मुक्त जीवन शली को अपनाती है। उसे पिकनिक, स्पोर्टस, पार्क, रेस्तरॉ, स्विमिंग, डांस से फुर्सत नहीं मिलती और इसी धुन में अबार्शन का शिकार होती है– ''और एक दिन अचानक उसका तार आया वह वापस आ रही है। स्टेशन पर जब उतरी तो, नीता थकी–सी लग रही थी। चेहरे पर बासीपन और कदमों में ठहराव आ गया था। पूछने पर उसने एक ही वाक्य में कहा था – तेज दौड़ में पिछड़ जाने वालों के लिए यही रास्ता है कि वह लौट पड़े।''[2]

'अतिशयोक्तिपूर्ण एक स्थिति' के मि॰ वर्मा एवं मिसेज वर्मा की है। फिल्म लाईन का गलैमर इस दम्पत्ति को आकृष्ट किये हुए है। मि॰ वर्मा अपनी पत्नी के सुडौल और सुन्दर रूप के

साथ बोल्डनेस का होना जरूरी समझकर उसे होटलों में भिड़ी, जालीदार, ब्लाऊज पहनाकर घुमाते है। परिणामस्वरूप कई अप्रिय घटनाएँ घटने से पहले उन्हें भाग जना पड़ता है। और इसका व्यंग्यात्मक चित्रण हुआ है।

'अठन्नी का घिसता वृत्त' महानगरीय परिवेश बोध को उजागर करती है। महानगर की अपनी जरूरतें होती है। शाम की काली रेखा छाते ही यहाँ का जीवन कठपुतलियों का चेतनाहीन सफर करता नजर आता है। बार, रेस्तरॉ, नाच–गाना एक धुंध छा जाती है। कहानी में महानगर जीवन बोध की तस्वीर उभरती है। वक्त बदलने के साथ टिप का रिवाज बदलता जा रहा है और 'कमीशन' का रिवाज चल निकला है। आज का परिवेश जिसमें ईश्वर, धर्म और आरोपित नैतिकता आदि से मुक्त होकर आदमी जीवन जीने की कोशिश में लगा हुआ है। अपने अस्तिवहीन हो जाने का अहसास उसके सपाट चेहरे से प्रामाणिक होता है। और गिरिराज किशोर की कहानी 'चेहरे' इस आधुनिकता बोध की विडम्बना को फैंटेसी के माध्यम से व्यक्त करती है। जीवन अधिक असुरक्षित और अविश्वसनीयत की स्थिति से गुजर रहा है।

''आदमी अपने स्तरों के घेरे में चलने के आदी बने है। सभी चेहरे सपाट, पंक्तिबद्ध और उत्तेजनहीन जीवन ढोने को विवश है। अपनी इच्छा आकांक्षा को भंग करने वाली व्यवस्था को कोसते है।''[3]

गिरिराज किशोर ने स्त्री–पुरुष संबंधों के प्राकृतिक रूप को प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस तथ्य को उजागर किया है कि भूख, निंद्रा और काम हर प्राणिमात्र की जैविक आवश्यकताएँ है। जिसे हर स्थिति में पाने की कोशिश सभी जीव करते है। और यही वह महत्वपूर्ण जैविक मूलभूत घटक है, जहाँ अन्य प्राणी और मानव के बीच कोई रेखा खींचना संभव नहीं।

2. सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य – संस्कृति सभ्यताओं के देश भारत में सामाजिक जीवन मूल्यों को सबसे अधिक प्रभावित करने वाले मूल्य पारम्परिक और प्रगतिशील है। परम्परा जहाँ समाज को अतीत से जोड़े रखने के लिए कटिबद्ध नजर आती है वहीं परिवर्तित मूल्य उन्हें नये सामाजिक परिदृश्य की ओर ले जाने का प्रयास करती है। भारतीय समाज परंपराओं की पक्षधरता के कारण प्रगतिशील मूल्यों को स्वीकार नहीं कर पाता लिहाजा एक अर्न्तद्वन्द्व मान्यताओं को लेकर बनता है। समय सापेक्ष परिवर्तित परिस्थितियों में युगीन सन्दर्भों के साथ तादाम्य बनाने में लिए सबसे अधिक आवश्यक नवीन जीवन मूल्यों को पक्षधरता और स्वीकार्यता है। इन कहानियों में स्वाधीनता कालीन पृष्ठभूमि आजादी के दिनों का परिवर्तित वातावरण, अंग्रेजी की यशोगाथा गाते सामंत और जमीदार। परिवर्तित राजनीतिक वातावरण में अपने को समायोजित करने का उपक्रम, दलित और उच्च वर्ग की कारगुजारियाँ उनकी अपेक्षाएँ और सामाजिक विक्षोभ आदि का बारीकी से चित्रण किया गया है।

गिरिराज किशोर की कलम भी बिना कोई लिबास पहने आर्थिक समस्याओं से जूझते कहानियों में चित्रित मानव पीड़ा का वह रूप है, जहाँ धर्म, नीति मूल्य ईमान, मान–मर्यादा सब कुछ पेट की आग में झलस कर राख बन जाता है। उस राख से उठते जीवन की यथार्थ प्रस्तुति गिरिराज किशोर की कहानियाँ है– ''कहानियाँ जिन्दगी की उन संकरी और कशमकश भरी पगंडडियों से ले जाती हैं, जहाँ से गुजरना इसको अपनी पहचान कराता है। वास्तव में ये कहानियाँ इंसानी जद्दोजहद का अपन आप में सम्पूर्ण साक्षात्कार है। ये साक्षात्कार तल्ख भी होता है और बैचेनी भी पैदा करता है।''[4]

'ढाईघर' में जहाँ कथाकार ने पुरुषों की अहमान्यता का सटीक वर्णन किया है। कथा विन्यास में वही यह भी सिद्ध किया है कि उन परिवारों में स्त्रियों की स्थिति कितनी दयनीय थी। बड़े राय से लेकर भास्कर राय तक की कथा यात्रा में स्त्रियाँ केवल बेगार या असामियों की तरह इस्तमाल होती थी। उन्हें भोग का अधिकार तो था परन्तु प्रेम और सामंजस्य की दृष्टि से वे निर्जीव और पुरुष की इच्छा की गुलाम थी। स्त्रियों की स्थिति के संदर्भ में लेखक कहता है– ''सभी औरते करीब–करीब एक–सा भाग लिखवा कर आती हैं। बच्चे हुएतो पति सुख नहीं देखा.. . पति सुख हुआ तो कुछ ओर हो गया। .... फिर भी डरती है जैसे गाय कसाई से डरती है। इतने नौकरों चाकरो के होते हुए रात–बेरात चूल्हा फूँकते–फूँकते आँखें खो दी, फिर हाथ पसारे चली गयी।''[5]

परम्परागत सामन्ती अहंवादिता और कुलीनता के दंभ के कारण बड़े राय बदलते समय के साथ दरकते जाते हैं। जिनसे अफसरों को उनसे मिलने में खुशी होती थी, वे मुहँ फेर लेते हैं, जिस परिवार के लोग उन्हें अपना मुखिया मानने में गर्व का अनुभव करते थे, वहीं उनसे आँखें चुरा लेते है। और उनसे अलग होते चले जाते है।

'जगलबंदी' की पूरी कथावस्तु में अनुकूल चरित्रों का निर्माण हुआ है। जो अपने वृहद फलक में समूचे स्वतंत्रता संग्राम की विशेषताओं, दुर्बलताओं, नेताओं, कार्यकत्ताओं के दो पहलूवाले चरित्रों एवं तदयुगीन जमींदारों, सामन्तों और आम जनता की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक वैचारिक स्थितियों का निष्पक्ष दस्तावेज है।

प्रगतिशील जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति देने वाली कहानियाँ मुख्य रूप से नवीन सामाजिक जीवन को अभिव्यक्ति देने वाली है। उच्च और संभ्रांत वर्ग, निम्न और दलित वर्ग समय सापेक्ष एक नये अंदाज में नये तौर तरीके अख्तियार करने की दौड़ में नजर आता है। परिवर्तन संसार का नियम है जो समय अनुसार नहीं बदलता वह नष्ट हो जाता है। यह शाश्वत सत्य है। रूढ़िवादी मानसिकता के कारण बहुत–सी समस्याएँ उत्पन्न होती है जिसमें जनसंख्या वृद्धि भी एक कारण है। जिससे आय में वृद्धि नहीं होती और परिवारों में अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

3. राष्ट्रीय एवं नैतिक मूल्य – गिरिराज किशोर की कहानियाँ एक विस्तृत विचार बोध को समेटे हुए है, यो तो उनकी दृष्टि उन जगहों पर टिकी है, जहाँ मानव अस्मिता चोट खाती है। वह चाहे सर्वेन्ट क्वार्टर में रहने वाले दो वक्त की रोटी तलाशते श्रमिक हो या उच्च शिक्षा और पद प्राप्त नौकरी पेशा व्यक्तित्व हो। कार्यालयों में कार्य करने वाले कर्मचारी हो, या देश की बागडोर संभालने वाले कथित सफेद पोश हो। गिरिराज किशोर सबकी करतूतों पर पैनो निगाहों से देखते, परखते है। जिनके राष्ट्रीय और सामाजिक मूल्य ताश के पत्ते के समान फटे हुए दिखते है। जो अपनी हर चाल में इक्के ही लगाते है।

समकालीन परिवेश में जीवन मूल्यों के बदलते आयामों में सबसे अधिक नैतिक मूल्यों का पतन किया है जिसकी छाया समाज, व्यवहार से आगे बढ़कर राष्ट्रीय सन्दभों तक में पड़ने लगी है। विज्ञानी, अन्वेषण, प्रत्यावर्तन, सौदागर एवं यंत्र मानव कहानियों में राष्ट्रीय एवं नैतिक स्थितियों की सच्चाई का बयान गिरिराज किशोर ने किया है। पैसे, प्रतिष्ठा की भूख ने समकालीन समाज की चेतना को किया है। पैसे, प्रतिष्ठा की भूख ने समकालीन समाज की चेतना को थोथा कर दिया है। सम्पूर्ण शक्ति मानसिक सुखानुभूति के लिए है। दीन, ईमान, कर्त्तव्य; आचरण का महत्व नगण्य हो जाता है। 'असलाह' के माध्यम से रचनाकार ने बारूद के

ढेर पर बसी दुनिया के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न अंकित किया है। विश्व की ज्वलंत समस्या से आतंकित मानव सभ्यता तथा विश्वयुद्ध के बढ़ते संकट को भी सभी तमाम विडम्बनाओं के साथ प्रस्तुत किया है। इन्होंने सर्वप्रथम विश्व में चल रही अस्त्र–शस्त्र स्पर्धा, दो या तीन गुटों में चल रही कुटिल राजनीतिक और उससे उत्पन्न तीसरे विश्वयुद्ध की संभावना को व्यक्त किया है। गिरिराज किशोर की 'लिफाफे' कहानी नौकरीशाह में व्याप्त भ्रष्टाचार, घूसखोरी, अनुशासनहीन और साजिशपूर्ण पैतरेबाजी को पूरी ईमानदारी के साथ व्यक्त करती है। समग्र व्यवस्था के ही मूल्यहीन बन जाने से उत्पन्न अनुशासनहीनता, निकम्मेपन और मानसिक तनाव से गुजरते पात्र कहानी में बखूबी से उभरे है; अनुशासनहीनता की व्यंजना कहानी के चपरासी रामसरन का कथन, ''कल से सफाई नहीं करेंगे। ये बाबू वहीं के वहीं बैठे पान को थूकते हैं, जिसे फाजिल मारे हो। ज्यादा तमीज बर्ती तो लिफाफे में लिफाफा भरकर पीक दान बना लेते हैं... बड़ी घिन आती है।''[6] किस प्रकार नेता, अफसर और बाबू का घूस लेना जारी है।

'बाहर एक सुहानापन था' भ्रष्ट, मूल्यहीन दफ्तरशाही का शिकार बने संवेदनशील आदमी की कहानी है। इसका नायक चरणदास, जीवनभर एक ही जगह पर बिना किसी तरक्की के कार्यरत है। जबकि उसके पीछे से आए लोग आगे निकल चुके हैं। सम्पूर्ण देश की व्यवस्था और नीति पर व्यंग्य करते हैं, ''वैसे भी साहब, इस मुल्क में अंधेरा ही रहा है। जब से गरीबी हटाओं का नारा लगा, बड़े से बड़ा गरीब हो गया। छोटे गरीब पीछे रह जायेगें, बड़ों का नम्बर पहले आ जायेगा।''[7]

'चिमनी' कहानी का दिवाकर पण्डित लालफिताशाही की घिनौनी नीति का शिकार हुआ है। अपना मानसिक संतुलन खो देता है। एक पुलिस ऑफिसर होने के नाते वह पूरी ईमानदारी से काम करता है। लेकिन ''मि. डी. के. पण्डित रिटायर्ड एसएसपी के साथ आपकी इस सरकार ने क्या–क्या ज्यादती नहीं की। उन्होंने एक बदमाश दरोगा को मुअत्तल किया। आय.जी. तक उससे घबराते थे फिर आय.जी. ने उसी दरोगा से मिलकर मि. पण्डित को फँसा दिया। आज पागलों की तरह सड़कों पर घूमे हैं। कोई सुनने वाला नहीं। यही है प्रोग्रेसिव सरकार।''[8]

'ततैया' कहानी प्रशासनिक तंत्र के पाश्विक रूप की यथार्थ अभिव्यक्ति है। सड़ी हुई लालफीताशाही और राजनीति व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाने का हस्र ब्या होता है, कहानी में बेबाकी के साथ व्यक्त हुआ है। मजिस्ट्रेट सभी को चेतावनी देते हैं कि पाँच मिनट के भीतर वे तितर–बितर हो जायें। लेकिन आंदोलनकारी छात्र नहीं मानते। मजिस्ट्रेट लाठियाँ, आँसू गैस और अंत में गोली चलाने का आदेश देते हैं। एक ही भगदड़ मचती है और गोलियाँ चलती हैं। मजिस्ट्रेट कहते हैं– ''हिटलर नाम के उस लौण्डे को गोली गल गयी... झगड़े की आधी बिनाह खत्म हो गयी।''[9]

वैश्विक परिदृश्य मनुष्य के कार्य व्यवहार और आचरण को तेजी से बदलते स्वरूप को देखने में पता चलता है कि किस प्रकार पैसे कमाने की होड़ में राष्ट्रीय और नैतिक चरित्र को उद्घाटित करने वाली गिरिराज किशोर की कहानी है– 'अन्वेषण' जिसमें तकनीकी खोज और उसके परिणामों को लेकर बात की गई है और नायक रामलिंगम् तार्किक प्रश्नों की झड़ी लगाकर वैज्ञानिकों के नैतिक और राष्ट्रीय चरित्र को उजागर करता है।

वास्तव में समय के अनुसार भले ही परिदृश्य परिवर्तित होते जाये किन्तु मूल्यों को स्थिर बनाये रखना एक आवश्यक चुनौती है।

संदर्भ

1. पेपरवेट– गिरिराज किशोर, पहले फ्लैप से
2. नीम के फूल – गिरिराज किशोर, पृष्ठ 3
3. रिश्ता और अन्य कहानियाँ – गिरिराज किशोर, पृष्ठ 10
4. डॉ. पुष्पपाल सिंह, आलेख 'प्रकर' 1981 जनवरी, पृष्ठ 23
5. गिरिराज किशोर – ढाई घर, पृष्ठ 70
6. गिरिराज किशोर – शहर–दर–शहर, पृष्ठ 34
7. वही, पृष्ठ 107
8. वही, पृष्ठ 27
9. हम प्यार कर लें – गिरिराज किशोर, पृष्ठ 62